दक्षिण हरियाणा की राजनीति में राव इंद्रजीत सिंह की भूमिका: अहीरवाल क्षेत्र के विशेष संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]पवन कुमार, [2]डॉ. नरेन्द्र सीमतवाल (प्राध्यापक)
[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक
[1-2]राजनीति विज्ञान विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार
हरियाणा की राजनीति प्रायः जाट बहुल मध्य हरियाणा के नेताओं के इर्द-गिर्द समझी जाती रही है, किंतु दक्षिण हरियाणा का अहीरवाल क्षेत्र अपनी अलग राजनीतिक पहचान रखता है। रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ और गुरुग्राम ज़िलों में फैले इस क्षेत्र की राजनीति पर पिछले पाँच दशकों से रामपुरा हाउस का गहरा प्रभाव रहा है, और इस परंपरा के वर्तमान प्रमुख चेहरे राव इंद्रजीत सिंह हैं। 1857 के योद्धा राव तुलाराम के वंशज और हरियाणा के दूसरे मुख्यमंत्री राव बीरेंद्र सिंह के पुत्र राव इंद्रजीत सिंह 1977 में पहली बार विधायक बने, चार बार जाटूसाना से विधानसभा पहुँचे, राज्य में मंत्री रहे और 1998 से छह बार लोकसभा के लिए चुने गए। कांग्रेस में लगभग चार दशक बिताने के बाद उन्होंने सितंबर 2013 में दक्षिण हरियाणा की उपेक्षा का आरोप लगाकर पार्टी छोड़ी और भाजपा के टिकट पर 2014, 2019 तथा 2024 में गुड़गाँव से जीते। प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों, निर्वाचन आयोग के आँकड़ों और राजनीतिक विज्ञान के साहित्य के आधार पर उनकी भूमिका का विश्लेषण करता है। गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र में उनका मत प्रतिशत 2009 के 36.83 से बढ़कर 2019 में 60.94 तक पहुँचा, जबकि 2024 में यह 50.48 प्रतिशत रहा और जीत का अंतर घटकर 75,079 मत रह गया। 2024 के विधानसभा चुनाव में अहीरवाल की सात में से छह सीटें भाजपा को मिलीं और उनकी पुत्री आरती सिंह राव अटेली से जीतकर राज्य मंत्रिमंडल में शामिल हुईं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि राव इंद्रजीत सिंह की शक्ति वंशगत विरासत, जातीय एकजुटता, क्षेत्रीय अस्मिता और विकास की राजनीति के मेल से बनी है, किंतु शहरीकरण और नई पीढ़ी की आकांक्षाएँ इस आधार के सामने नई चुनौतियाँ भी खड़ी कर रही हैं।

मुख्य-शब्द: राव इंद्रजीत सिंह, अहीरवाल, दक्षिण हरियाणा, रामपुरा हाउस, क्षेत्रीय राजनीति, वंशवादी राजनीति, गुड़गाँव लोकसभा

1. प्रस्तावना

रेवाड़ी के पुराने बाज़ारों से लेकर गुरुग्राम की ऊँची इमारतों तक फैला दक्षिण हरियाणा एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ इतिहास और आधुनिकता साथ-साथ चलते हैं। इसी क्षेत्र का बड़ा हिस्सा "अहीरवाल" कहलाता है, अर्थात वह भूभाग जहाँ अहीर या यादव समुदाय की बहुलता रही है। यहाँ के लोग सेना में बड़ी संख्या में सेवा देने, 1857 के संघर्ष में भागीदारी और खेती पर निर्भर अर्ध-शुष्क भूमि के लिए जाने जाते हैं। लंबे समय तक यह क्षेत्र विकास में पिछड़ा और राज्य की सत्ता में कम प्रतिनिधित्व वाला माना गया, और यही भावना यहाँ की राजनीति का एक स्थायी स्वर बन गई।

इस क्षेत्रीय राजनीति को आकार देने में रेवाड़ी के रामपुरा हाउस की भूमिका केंद्रीय रही है। राव तुलाराम ने 1857 में अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष किया, उनके वंशज राव बीरेंद्र सिंह 1967 में हरियाणा के मुख्यमंत्री बने, और उनके पुत्र राव इंद्रजीत सिंह आज केंद्र सरकार में मंत्री और अहीरवाल के सबसे प्रभावशाली नेता हैं। तीन पीढ़ियों तक फैली यह राजनीतिक परंपरा अब चौथी कड़ी के रूप में आरती सिंह राव तक पहुँच चुकी है।

राव इंद्रजीत सिंह की राजनीति कई कारणों से अध्ययन योग्य है। वे कांग्रेस और भाजपा दोनों में सफल रहे, उन्होंने

राज्य और केंद्र दोनों स्तरों पर मंत्री पद संभाला, और दल बदलने के बाद भी अपने समर्थन आधार को बनाए रखा। उनका राजनीतिक जीवन यह समझने का अवसर देता है कि भारतीय लोकतंत्र में व्यक्तिगत करिश्मा, वंशगत विरासत, जातीय पहचान और क्षेत्रीय असंतोष किस प्रकार मिलकर स्थायी जनाधार बनाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी प्रश्न की पड़ताल करता है।

2. साहित्य समीक्षा

कोठारी (1964) ने स्वतंत्रता के बाद की भारतीय राजनीति को "कांग्रेस प्रणाली" के रूप में समझाया, जिसमें कांग्रेस एक व्यापक छत्र दल थी और उसके भीतर विभिन्न गुट, जातियाँ और क्षेत्रीय नेता प्रतिस्पर्धा करते थे। उनके अनुसार असंतुष्ट गुट दल के भीतर ही दबाव बनाते थे और कभी-कभी अलग होकर नए मंच तैयार करते थे।

ब्रास (1965) ने उत्तर प्रदेश कांग्रेस के गुटों का अध्ययन किया और पाया कि गुटबाज़ी व्यक्तिगत निष्ठाओं, जातीय नेटवर्क और स्थानीय संरक्षण पर आधारित थी, जिसने राज्य स्तरीय नेताओं के उदय और पतन को प्रभावित किया।

वाइनर (1967) ने कांग्रेस के संगठनात्मक विस्तार पर लिखते हुए दिखाया कि दल ने ज़िलों में प्रभावशाली परिवारों और स्थानीय नेताओं को जोड़कर अपनी जड़ें मज़बूत कीं, जिससे स्थानीय प्रभुत्व वाले परिवार राष्ट्रीय दल के भीतर शक्ति केंद्र बन गए।

रुडोल्फ एवं रुडोल्फ (1967) ने तर्क दिया कि जाति आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति में समाप्त होने के बजाय नए रूप में संगठित हुई और जाति संघों ने मतदाताओं को एकजुट कर राजनीतिक प्रतिनिधित्व की माँग का माध्यम बनकर कार्य किया।

यादव, के. सी. (1977) ने हरियाणा में 1857 के विद्रोह का विस्तृत अध्ययन किया और रेवाड़ी के राव तुलाराम के नेतृत्व में अहीरवाल क्षेत्र की भूमिका को रेखांकित किया, जिसने बाद में इस क्षेत्र की राजनीतिक स्मृति और पहचान को आकार दिया।

यादव, वाई. (1999) ने 1989 से 1999 के दौर को भारत की "तीसरी चुनावी व्यवस्था" कहा, जिसमें राज्य स्तरीय राजनीति, पिछड़ी जातियों का उभार और गठबंधन राजनीति निर्णायक बने।

जैफ़्रेलो (2003) ने उत्तर भारत में निम्न और पिछड़ी जातियों के राजनीतिक उभार को "मौन क्रांति" के रूप में व्याख्यायित किया और दिखाया कि यादव जैसे समुदायों ने चुनावी राजनीति के माध्यम से सत्ता में भागीदारी बढ़ाई।

चंद्रा (2004) ने भारत में जातीय दलों की सफलता का अध्ययन किया और पाया कि मतदाता उन नेताओं और दलों को समर्थन देते थे जिनमें उन्हें अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व और संरक्षण की संभावना दिखती थी।

मिचेलुट्टी (2008) ने मथुरा के यादव समुदाय पर नृजातीय अध्ययन में दिखाया कि यादवों ने अपनी योद्धा परंपरा और पौराणिक पहचान को लोकतांत्रिक राजनीति की भाषा में ढाला और राजनीति को सामुदायिक सम्मान से जोड़ा।

चंद्रा (2016) के संपादन में प्रकाशित अध्ययनों ने भारतीय राजनीति में वंशवादी नेताओं का विश्लेषण किया और पाया कि लोकसभा के सदस्यों का उल्लेखनीय हिस्सा राजनीतिक परिवारों से आता था, क्योंकि ऐसे परिवार नाम की पहचान, संगठन और संसाधन साथ लेकर आते थे।

उपर्युक्त साहित्य दल प्रणाली, गुटबाज़ी, जातीय राजनीति और वंशवाद पर विस्तृत दृष्टि प्रदान करता है, तथा 1857 में अहीरवाल की भूमिका पर ऐतिहासिक अध्ययन भी उपलब्ध रहे। किंतु दक्षिण हरियाणा की समकालीन राजनीति और विशेष रूप से राव इंद्रजीत सिंह के नेतृत्व पर केंद्रित विश्लेषणात्मक अध्ययन बहुत कम हुए। प्रस्तुत अध्ययन इसी कमी को पूरा करने का प्रयास है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. दक्षिण हरियाणा और अहीरवाल क्षेत्र की राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. राव इंद्रजीत सिंह के राजनीतिक जीवन के प्रमुख चरणों का विश्लेषण करना।
3. गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र और अहीरवाल की विधानसभा सीटों पर उनके चुनावी प्रभाव का मूल्यांकन करना।

4. उनकी राजनीति के आधार, उपलब्धियों, सीमाओं और भविष्य की चुनौतियों की पहचान करना।

4. शोध प्रविधि

अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। राव इंद्रजीत सिंह के पदों और कार्यकाल संबंधी तथ्य सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (2024) द्वारा प्रकाशित आधिकारिक परिचय से लिए गए हैं। लोकसभा चुनाव परिणाम भारत निर्वाचन आयोग के आँकड़ों पर आधारित हैं, और 2024 के विधानसभा चुनाव से संबंधित तथ्य प्रमुख समाचार पत्रों की रिपोर्टों से लिए गए हैं। राजनीतिक विज्ञान के प्रकाशित साहित्य के आधार पर इन तथ्यों की व्याख्या की गई है। चुनावी आँकड़ों का विश्लेषण मत प्रतिशत और जीत के अंतर के माध्यम से किया गया है।

5. दक्षिण हरियाणा और अहीरवाल: राजनीतिक पृष्ठभूमि

5.1 भौगोलिक और सामाजिक परिचय

अहीरवाल क्षेत्र मुख्यतः रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ और गुरुग्राम ज़िलों तथा उनसे लगे राजस्थान के अलवर क्षेत्र तक फैला माना जाता है। यह अरावली की पहाड़ियों से घिरा अर्ध-शुष्क क्षेत्र है, जहाँ लंबे समय तक सिंचाई की कमी, भूजल का गिरता स्तर और सीमित उद्योग प्रमुख समस्याएँ रहीं। यहाँ की सामाजिक संरचना में अहीर समुदाय के साथ अनुसूचित जातियाँ, ब्राह्मण, राजपूत, जाट, गुर्जर, बनिया और मेव समुदाय भी हैं। सेना में भर्ती इस क्षेत्र की पहचान का अहम हिस्सा है, और पूर्व सैनिकों का सामाजिक प्रभाव राजनीति में भी दिखाई देता है।

5.2 ऐतिहासिक विरासत

1857 में रेवाड़ी के राव तुलाराम ने अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध क्षेत्र के लोगों को संगठित किया और नसीबपुर के युद्ध में अंग्रेज़ों का सामना किया (यादव, के. सी., 1977)। यह स्मृति आज भी अहीरवाल की सामूहिक पहचान का केंद्र है और राजनीतिक सभाओं में बार-बार दोहराई जाती है। स्वतंत्रता के बाद यही विरासत रामपुरा हाउस की राजनीतिक वैधता का आधार बनी।

5.3 हरियाणा गठन के बाद की राजनीति

1966 में हरियाणा के गठन के बाद राज्य की राजनीति पर प्रायः जाट नेताओं का वर्चस्व रहा, और दक्षिण हरियाणा में यह भावना पनपी कि सत्ता और विकास का लाभ मध्य हरियाणा को अधिक मिलता है। 1967 में राव बीरेंद्र सिंह ने कांग्रेस से अलग होकर विशाल हरियाणा पार्टी बनाई और कुछ महीनों के लिए राज्य के मुख्यमंत्री बने। यह पहला अवसर था जब अहीरवाल का नेता राज्य के सर्वोच्च पद तक पहुँचा। आगे चलकर राव बीरेंद्र सिंह केंद्र में मंत्री रहे, और उनकी राजनीति ने यह स्थापित किया कि दक्षिण हरियाणा की आवाज़ एक संगठित क्षेत्रीय नेतृत्व के माध्यम से ही प्रभावी हो सकती है।

5.4 दक्षिण हरियाणा के प्रमुख मुद्दे

अहीरवाल की राजनीति कुछ स्थायी मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती रही है, जिन्हें समझे बिना यहाँ के नेतृत्व का मूल्यांकन संभव नहीं है:

- **पानी का प्रश्न:** अर्ध-शुष्क भूमि और गिरते भूजल के कारण नहरी पानी का बँटवारा इस क्षेत्र का सबसे भावनात्मक मुद्दा रहा है। जवाहरलाल नेहरू लिफ़्ट नहर जैसी योजनाओं से पानी पहुँचाने के प्रयास हुए, फिर भी टेल तक पानी न पहुँचने की शिकायत बनी रही।
- **सैन्य परंपरा और भर्ती:** अहीरवाल के हज़ारों परिवारों का जीवन सेना से जुड़ा है। सेना में "अहीर रेजिमेंट" के गठन की माँग लंबे समय से यहाँ की राजनीति में उठती रही है, और भर्ती नीतियों में बदलाव सीधे मतदाताओं की भावनाओं को प्रभावित करते हैं।
- **औद्योगिक और शहरी विकास:** गुरुग्राम, मानेसर, बावल और धारूहेड़ा के औद्योगिक विस्तार ने रोज़गार के अवसर दिए, किंतु भूमि अधिग्रहण, मुआवज़े और स्थानीय युवाओं को रोज़गार में प्राथमिकता के प्रश्न भी खड़े

किए।

- **स्वास्थ्य और शिक्षा संस्थान:** उच्च स्तरीय अस्पताल, विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थानों की कमी को क्षेत्र के पिछड़ेपन का प्रतीक माना गया, और इनकी स्थापना की माँग चुनावी वादों का हिस्सा बनी रही।

इन मुद्दों ने अहीरवाल में यह भावना मज़बूत की कि क्षेत्र को अपने हितों की रक्षा के लिए एक सशक्त प्रतिनिधि की आवश्यकता है, और रामपुरा हाउस ने स्वयं को इसी भूमिका में प्रस्तुत किया।

6. राव इंद्रजीत सिंह का राजनीतिक जीवन

6.1 व्यक्तिगत पृष्ठभूमि

राव इंद्रजीत सिंह का जन्म 11 फ़रवरी 1950 को रेवाड़ी में हुआ। उन्होंने लॉरेंस स्कूल, सनावर से प्रारंभिक शिक्षा, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज से स्नातक और विधि संकाय से एलएल.बी. की उपाधि प्राप्त की। राजनीति के साथ-साथ वे एक कुशल निशानेबाज़ भी रहे; 1990 से 2003 तक वे भारतीय निशानेबाज़ी टीम के सदस्य रहे, लगातार तीन वर्ष राष्ट्रीय स्कीट चैंपियन बने और सैफ़ खेलों में स्वर्ण पदक जीते (सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, 2024)।

6.2 राज्य स्तर पर राजनीति (1977 से 2004)

राव इंद्रजीत सिंह ने 1977 में जाटूसाना विधानसभा क्षेत्र से पहली बार जीत दर्ज की और चार बार (1977, 1982, 1991 और 2000) इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। 1986-87 में वे खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री बने, और 1991 से 1996 तक पर्यावरण एवं वन तथा चिकित्सा एवं तकनीकी शिक्षा विभागों के कैबिनेट मंत्री रहे। इस दौर में उन्होंने संगठन और प्रशासन दोनों का अनुभव अर्जित किया और ग्रामीण अहीरवाल में अपना व्यक्तिगत नेटवर्क मज़बूत किया।

6.3 राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश

1998 में वे महेंद्रगढ़ से पहली बार लोकसभा पहुँचे और 2004 में फिर इसी क्षेत्र से जीते। 2004 से 2006 तक वे विदेश राज्य मंत्री और 2006 से 2009 तक रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री रहे। 2008 के परिसीमन के बाद नवगठित गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र से उन्होंने 2009 का चुनाव जीता और 2009 से 2014 तक सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे।

6.4 कांग्रेस से भाजपा तक

राव इंद्रजीत सिंह ने 23 सितंबर 2013 को कांग्रेस से त्यागपत्र दिया। उनका आरोप था कि केंद्र और राज्य की कांग्रेस सरकारें विकास कार्यों के आवंटन में दक्षिण हरियाणा के साथ भेदभाव कर रही हैं। लगभग चार दशक तक कांग्रेस में रहने के बाद वे भाजपा में शामिल हुए और 2014 में गुड़गाँव से भाजपा प्रत्याशी के रूप में बड़े अंतर से जीते। यह निर्णय कोठारी (1964) द्वारा वर्णित उस प्रवृत्ति का उदाहरण था जिसमें प्रभावशाली क्षेत्रीय नेता अपने दल में उपेक्षा महसूस करने पर नए मंच की ओर बढ़ते हैं, और उनके साथ उनका जनाधार भी स्थानांतरित होता है।

6.5 केंद्र सरकार में भूमिका

मोदी सरकार के तीनों कार्यकालों में राव इंद्रजीत सिंह को मंत्री पद मिला। तालिका 1 में उनके प्रमुख पदों और कार्यकाल का क्रम दिया गया है।

तालिका 1: राव इंद्रजीत सिंह के प्रमुख राजनीतिक पद

अवधि	पद
1977-1982, 1982-1987, 1991-1996, 2000-2004	विधायक, जाटूसाना (चार कार्यकाल)
1986-1987	राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, हरियाणा
1991-1996	कैबिनेट मंत्री, पर्यावरण एवं वन तथा चिकित्सा एवं तकनीकी शिक्षा, हरियाणा
1998, 2004	सांसद, महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र
2004-2006	केंद्रीय राज्य मंत्री, विदेश मामले
2006-2009	केंद्रीय राज्य मंत्री, रक्षा उत्पादन
2009, 2014, 2019, 2024	सांसद, गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र
2014-2019	राज्य मंत्री, योजना (स्वतंत्र प्रभार), साथ में समय-समय पर रक्षा, शहरी विकास तथा रसायन एवं उर्वरक
2019-2024	राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन तथा योजना; 2021 से कॉर्पोरेट मामले भी
2024 से	राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन तथा योजना; राज्य मंत्री, संस्कृति

स्रोत: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (2024)।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि राव इंद्रजीत सिंह ने लगभग पाँच दशकों में राज्य और केंद्र, दोनों स्तरों पर लगातार सक्रिय भूमिका निभाई। यूपीए और एनडीए, दोनों सरकारों में मंत्री रहना उनके प्रशासनिक अनुभव और राजनीतिक उपयोगिता को दर्शाता है। हालाँकि वे केंद्र में कैबिनेट स्तर तक नहीं पहुँचे, और उनके समर्थक इसे अहीरवाल को अपेक्षित सम्मान न मिलने के रूप में भी देखते रहे हैं।

7. चुनावी प्रभाव का विश्लेषण

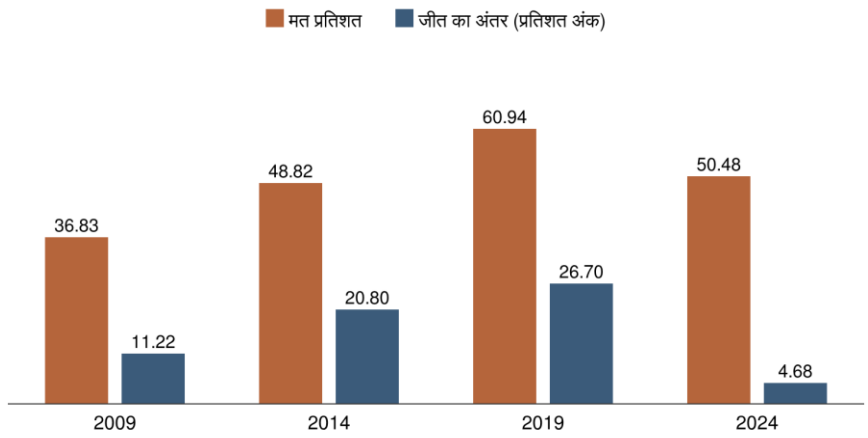
7.1 गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र

गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र में रेवाड़ी ज़िले की बावल और रेवाड़ी, गुरुग्राम ज़िले की पटौदी, बादशाहपुर, गुड़गाँव और सोहना, तथा नूंह ज़िले की नूंह, फ़िरोज़पुर झिरका और पुन्हाना विधानसभा सीटें शामिल हैं। इस प्रकार इसमें अहीरवाल का ग्रामीण क्षेत्र, गुरुग्राम का महानगरीय क्षेत्र और मेव बहुल नूंह, तीनों प्रकार के मतदाता हैं। तालिका 2 में इस क्षेत्र के चार चुनावों के परिणाम दिए गए हैं।

तालिका 2: गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र में राव इंद्रजीत सिंह के चुनाव परिणाम

वर्ष	दल	प्राप्त मत	मत प्रतिशत	निकटतम प्रतिद्वंद्वी	जीत का अंतर (मत)	अंतर (प्रतिशत अंक)
2009	कांग्रेस	2,78,516	36.83	ज़ाकिर हुसैन (बसपा)	84,864	11.22
2014	भाजपा	6,44,780	48.82	ज़ाकिर हुसैन (इनेलो)	2,74,722	20.80
2019	भाजपा	8,81,546	60.94	कैप्टन अजय सिंह यादव (कांग्रेस)	3,86,256	26.70
2024	भाजपा	8,08,336	50.48	राज बब्बर (कांग्रेस)	75,079	4.68

स्रोत: भारत निर्वाचन आयोग, लोकसभा आम चुनाव 2009, 2014, 2019 एवं 2024 के परिणाम।



चित्र 1: गुड़गाँव लोकसभा क्षेत्र में राव इंद्रजीत सिंह का मत प्रतिशत और जीत का अंतर (तालिका 2 पर आधारित)

तालिका 2 और चित्र 1 से तीन महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं। पहली, दल बदलने के बाद उनका जनाधार घटा नहीं बल्कि बढ़ा; 2009 में कांग्रेस से 36.83 प्रतिशत मत पाने वाले राव इंद्रजीत सिंह को 2014 में भाजपा से 48.82 प्रतिशत मत मिले। इससे पता चलता है कि उनके समर्थकों की निष्ठा दल से अधिक व्यक्ति के प्रति थी। दूसरी, 2019 में 60.94 प्रतिशत मत और 3,86,256 मतों का अंतर उनके प्रभाव और राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा की लहर, दोनों के मेल का परिणाम था। तीसरी, 2024 में मत प्रतिशत घटकर 50.48 रह गया और अंतर केवल 75,079 मतों का रहा। नूंह क्षेत्र में विपक्ष के पक्ष में एकजुट मतदान और शहरी मतदाताओं में बदलती प्राथमिकताओं ने मुकाबले को कड़ा बनाया। फिर भी लगातार चौथी जीत ने यह स्पष्ट किया कि विविध सामाजिक संरचना वाले इस क्षेत्र में उनका आधार अब भी सबसे मज़बूत है।

7.2 अहीरवाल की विधानसभा राजनीति

राव इंद्रजीत सिंह का प्रभाव केवल उनके अपने चुनाव तक सीमित नहीं है। विधानसभा चुनावों में टिकट वितरण, प्रचार और समर्थकों की जीत में उनकी भूमिका निर्णायक मानी जाती है। 2024 के हरियाणा विधानसभा चुनाव में रेवाड़ी और महेंद्रगढ़ ज़िलों की सात सीटों में से छह भाजपा ने जीतीं, जबकि 2019 में यह संख्या पाँच थी (तालिका 3)।

तालिका 3: हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 में अहीरवाल की सीटों के परिणाम

विधानसभा क्षेत्र	विजेता	दल	जीत का अंतर (मत)
रेवाड़ी	लक्ष्मण सिंह यादव	भाजपा	28,769
कोसली	अनिल यादव	भाजपा	17,160
बावल (अ.जा.)	डॉ. कृष्ण कुमार	भाजपा	20,011
महेंद्रगढ़	कंवर सिंह यादव	भाजपा	2,648
नारनौल	ओम प्रकाश यादव	भाजपा	17,171
अटेली	आरती सिंह राव	भाजपा	3,085
नांगल चौधरी	मंजू चौधरी	कांग्रेस	6,930

स्रोत: द ट्रिब्यून, 9 अक्टूबर 2024 की रिपोर्ट के आधार पर संकलित।

समाचार रिपोर्टों के अनुसार राव इंद्रजीत सिंह के जिन समर्थकों को टिकट मिला, वे सभी विजयी रहे, और महेंद्रगढ़ सीट भाजपा ने कांग्रेस से छीनी। इस परिणाम के बाद उनकी पुत्री आरती सिंह राव को राज्य मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री बनाया गया, जिसे स्थानीय विश्लेषकों ने अहीरवाल में रामपुरा हाउस के प्रभुत्व की पुनर्स्थापना के रूप में देखा।

राज्य में भाजपा की लगातार तीसरी सरकार बनाने में अहीरवाल का यह समर्थन महत्त्वपूर्ण माना गया।

8. राव इंद्रजीत सिंह की राजनीति के आधार

8.1 वंशगत विरासत

राव तुलाराम से राव बीरेंद्र सिंह और फिर राव इंद्रजीत सिंह तक की वंश परंपरा उन्हें एक ऐसी पहचान देती है जो केवल चुनावी नहीं बल्कि ऐतिहासिक और भावनात्मक है। चंद्रा (2016) ने जिन लाभों का उल्लेख किया, अर्थात नाम की पहचान, पुराना संगठन और संसाधन, वे सब रामपुरा हाउस के पास हैं। साथ ही इस परंपरा ने हर पीढ़ी में स्वयं को चुनाव की कसौटी पर सिद्ध किया है।

8.2 जातीय और सामुदायिक एकजुटता

अहीर समुदाय का बड़ा हिस्सा राव इंद्रजीत सिंह को अपना स्वाभाविक नेता मानता है। जैफ्रेलो (2003) ने उत्तर भारत में यादव समुदाय के राजनीतिक उभार का जो चित्र प्रस्तुत किया, अहीरवाल में वह एक विशिष्ट रूप लेता है, जहाँ सामुदायिक नेतृत्व एक राजघराने की परंपरा से जुड़ा है। फिर भी उनकी जीत केवल एक समुदाय पर निर्भर नहीं रही; अनुसूचित जातियों, ब्राह्मणों, बनियों और शहरी मध्यवर्ग का समर्थन भी उनकी सफलता का आधार रहा।

8.3 क्षेत्रीय अस्मिता

दक्षिण हरियाणा की उपेक्षा का मुद्दा उनकी राजनीति का स्थायी स्वर रहा है। मुख्यमंत्री पद के लिए अहीरवाल की दावेदारी, मंत्रिमंडल में क्षेत्र को उचित प्रतिनिधित्व और विकास परियोजनाओं में न्यायपूर्ण हिस्सेदारी की माँग उठाकर उन्होंने स्वयं को केवल एक दल के नेता के बजाय पूरे क्षेत्र के प्रवक्ता के रूप में स्थापित किया। 2013 में कांग्रेस छोड़ते समय भी उन्होंने यही तर्क दिया था।

8.4 विकास की राजनीति

राव इंद्रजीत सिंह के समर्थक रेवाड़ी में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना, क्षेत्र में राजमार्गों और सड़कों के विस्तार तथा गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण के गठन को उनकी प्रमुख उपलब्धियों के रूप में गिनाते हैं। गुरुग्राम जैसे तेज़ी से बढ़ते महानगर और पिछड़े ग्रामीण अहीरवाल, दोनों की आवश्यकताओं को साथ लेकर चलना उनकी विकास राजनीति की विशेषता रही है।

8.5 नेतृत्व शैली

राव इंद्रजीत सिंह की नेतृत्व शैली में पारंपरिक और आधुनिक, दोनों तत्व दिखाई देते हैं। रेवाड़ी स्थित रामपुरा हाउस वर्षों से कार्यकर्ताओं, पंचायत प्रतिनिधियों और आम लोगों के मिलने का केंद्र रहा है, जहाँ व्यक्तिगत समस्याओं से लेकर चुनावी रणनीति तक पर चर्चा होती है। गाँव-गाँव में फैले समर्थकों का यह नेटवर्क दल बदलने के बाद भी उनके साथ बना रहा, जिससे स्पष्ट होता है कि यह संगठन दल के ढाँचे से अलग, व्यक्ति केंद्रित निष्ठा पर टिका है। ब्रास (1965) ने जिस प्रकार के व्यक्तिगत निष्ठा वाले गुटों का वर्णन किया था, उसका एक स्थिर और दीर्घकालिक रूप यहाँ दिखाई देता है। दूसरी ओर, संसदीय समिति के अध्यक्ष और योजना तथा सांख्यिकी जैसे मंत्रालयों के प्रभारी के रूप में उन्होंने नीति और प्रशासन से जुड़ी आधुनिक भूमिका भी निभाई। मुद्दों पर खुलकर बोलना और कभी-कभी अपने ही दल की राज्य इकाई से असहमति जताना भी उनकी शैली का हिस्सा रहा है, जिसने उन्हें एक स्वतंत्र छवि वाला नेता बनाया।

8.6 अन्य राजनीतिक परिवारों से तुलना

हरियाणा की राजनीति लंबे समय तक कुछ परिवारों के इर्द-गिर्द घूमती रही है, जिनमें देवीलाल, बंसीलाल और भजनलाल के परिवार प्रमुख रहे। 2024 के विधानसभा चुनाव में इनमें से कई परिवारों को झटका लगा; भजनलाल परिवार अपनी परंपरागत आदमपुर सीट हार गया और चौटाला परिवार को भी उचाना कलाँ सहित कई जगह पराजय मिली। इसके विपरीत रामपुरा हाउस ने न केवल अपना आधार बचाया बल्कि आरती सिंह राव की जीत और मंत्री पद के माध्यम से अगली पीढ़ी को भी स्थापित किया। इस अंतर का एक कारण यह है कि रामपुरा हाउस का प्रभाव एक

भौगोलिक रूप से संगठित क्षेत्र और उसकी साझा पहचान पर टिका है, जबकि अन्य परिवारों का आधार अधिक बिखरा हुआ और दलगत समीकरणों पर निर्भर रहा। दूसरा कारण समय पर दल बदलकर सत्ताधारी गठबंधन से जुड़ना भी रहा। यह तुलना दिखाती है कि वंशवादी राजनीति की सफलता केवल परिवार के नाम से नहीं, बल्कि क्षेत्रीय पहचान और बदलती परिस्थितियों में सही राजनीतिक निर्णय लेने की क्षमता से तय होती है।

9. चुनौतियाँ और सीमाएँ

- **घटता चुनावी अंतर:** 2024 के लोकसभा चुनाव में जीत का अंतर 2019 की तुलना में बहुत घट गया, जो बदलते मतदाता व्यवहार का संकेत है।
- **शहरीकरण और नए मतदाता:** गुरुग्राम के प्रवासी और पेशेवर मतदाता पारंपरिक वंशगत या जातीय निष्ठा से कम प्रभावित होते हैं और नागरिक सुविधाओं, यातायात तथा जलभराव जैसे मुद्दों पर मतदान करते हैं।
- **दल के भीतर समीकरण:** भाजपा में राज्य नेतृत्व के साथ संतुलन और मुख्यमंत्री पद की आकांक्षा को लेकर समय-समय पर मतभेद की चर्चाएँ होती रही हैं।
- **उत्तराधिकार का प्रश्न:** वंशगत राजनीति अगली पीढ़ी तक प्रभाव पहुँचाती है, पर उसे यह भी सिद्ध करना होता है कि नेतृत्व केवल परिवार के नाम पर नहीं बल्कि कार्य के आधार पर है।
- **क्षेत्रीय समस्याएँ:** पानी की कमी, भूजल का संकट, ग्रामीण बेरोज़गारी और अरावली के पर्यावरण की रक्षा जैसी समस्याएँ अब भी पूरी तरह हल नहीं हुई हैं।

10. सुझाव

1. अहीरवाल में जल प्रबंधन के लिए नहरी पानी के न्यायपूर्ण बँटवारे के साथ वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण को प्राथमिकता दी जाए।
2. गुरुग्राम के तेज़ शहरी विस्तार के साथ ग्रामीण अहीरवाल में भी उद्योग, कौशल प्रशिक्षण और रोज़गार के अवसर बढ़ाए जाएँ, ताकि विकास का लाभ पूरे क्षेत्र तक पहुँचे।
3. रेवाड़ी में स्थापित हो रहे एम्स जैसे संस्थानों को समय पर पूरा कर क्षेत्र को स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा का केंद्र बनाया जाए।
4. क्षेत्रीय नेतृत्व को वंशगत पहचान के साथ-साथ नई पीढ़ी के कार्यकर्ताओं और शहरी मतदाताओं की अपेक्षाओं को भी स्थान देना होगा।
5. अहीरवाल की राजनीति और मतदान व्यवहार पर प्राथमिक सर्वेक्षण आधारित शोध को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि क्षेत्रीय नेतृत्व का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन हो सके।

11. निष्कर्ष

दक्षिण हरियाणा की राजनीति में राव इंद्रजीत सिंह की भूमिका किसी एक दल या एक चुनाव तक सीमित नहीं है। 1977 से अब तक के लगभग पाँच दशकों में उन्होंने विधायक, राज्य मंत्री, सांसद और केंद्रीय मंत्री के रूप में अहीरवाल का प्रतिनिधित्व किया है। राव तुलाराम की विरासत, राव बीरेंद्र सिंह की क्षेत्रीय राजनीति और अपने स्वयं के प्रशासनिक अनुभव को जोड़कर उन्होंने एक ऐसा जनाधार बनाया जो 2013 में दल बदलने के बाद भी उनके साथ रहा और लगातार मज़बूत हुआ। गुड़गाँव से चार लगातार जीत और 2024 में अहीरवाल की सात में से छह विधानसभा सीटों पर भाजपा की सफलता उनके प्रभाव की पुष्टि करती है। साथ ही 2024 में घटा हुआ अंतर, गुरुग्राम का बदलता शहरी मतदाता और उत्तराधिकार का प्रश्न यह संकेत देते हैं कि भविष्य में यह प्रभाव केवल विरासत और पहचान पर नहीं, बल्कि विकास और जवाबदेही पर अधिक निर्भर करेगा। राव इंद्रजीत सिंह का राजनीतिक जीवन इस बात का उदाहरण है कि भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय नेतृत्व किस प्रकार परंपरा और परिवर्तन के बीच संतुलन बनाकर अपनी प्रासंगिकता बनाए रखता है।

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। भविष्य में अहीरवाल के मतदाताओं, कार्यकर्ताओं और स्थानीय नेताओं

पर प्राथमिक सर्वेक्षण के माध्यम से उनके नेतृत्व की लोकप्रियता और प्रभाव का अधिक गहन विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोठारी, आर. (1964). भारत में कांग्रेस "प्रणाली". एशियन सर्वे, 4(12), 1161-1173.
2. चंद्रा, के. (2004). व्हाई एथनिक पार्टीज़ सक्सीड: पैट्रोनेज एंड एथनिक हेड काउंट्स इन इंडिया. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.
3. चंद्रा, के. (संपा.). (2016). डेमोक्रेटिक डायनेस्टीज़: स्टेट, पार्टी एंड फ़ैमिली इन कंटेम्पररी इंडियन पॉलिटिक्स. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.
4. जैफ़्रेलो, सी. (2003). इंडियाज़ साइलेंट रिवोल्यूशन: द राइज़ ऑफ़ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया. परमानेंट ब्लैक, दिल्ली.
5. ब्रास, पी. आर. (1965). फ़ैक्शनल पॉलिटिक्स इन एन इंडियन स्टेट: द कांग्रेस पार्टी इन उत्तर प्रदेश. यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, बर्कले.
6. भारत निर्वाचन आयोग. (2009, 2014, 2019, 2024). लोकसभा आम चुनाव: सांख्यिकीय रिपोर्ट. भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली.
7. मिचेलुट्टी, एल. (2008). द वर्नाक्युलराइज़ेशन ऑफ़ डेमोक्रेसी: पॉलिटिक्स, कास्ट एंड रिलीजन इन इंडिया. रूटलेज, नई दिल्ली.
8. यादव, के. सी. (1977). द रिवोल्ट ऑफ़ 1857 इन हरियाणा. मनोहर, नई दिल्ली.
9. यादव, वाई. (1999). परिवर्तन के समय की चुनावी राजनीति: भारत की तीसरी चुनावी व्यवस्था, 1989-99. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 34(34-35), 2393-2399.
10. रुडोल्फ, एल. आई., एवं रुडोल्फ, एस. एच. (1967). द मॉडर्निटी ऑफ़ ट्रेडिशन: पॉलिटिकल डेवलपमेंट इन इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, शिकागो.
11. वाइनर, एम. (1967). पार्टी बिल्डिंग इन ए न्यू नेशन: द इंडियन नेशनल कांग्रेस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, शिकागो.
12. सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय. (2024, 28 जून). राव इंद्रजीत सिंह: मंत्री परिचय. भारत सरकार, नई दिल्ली.
13. सैनी, आर. (2024, 9 अक्टूबर). अहीरवाल में राव इंद्रजीत सिंह के प्रभाव से भाजपा ने सात में से छह सीटें जीतीं. द ट्रिब्यून, रेवाड़ी संस्करण.
14. सैनी, आर. (2024, 18 अक्टूबर). आरती राव के कैबिनेट मंत्री बनने के साथ रामपुरा हाउस फिर प्रभावी. द ट्रिब्यून, रेवाड़ी संस्करण.